

देवीकालोत्तरागमः

निरञ्जनसिद्धविरचितवृत्त्या

भाषानुवादेन च सहितः

सम्पादकोऽनुवादकश्च

राष्ट्रियपण्डितः श्रीब्रजवल्लभद्विवेदः

शैवभारती-शोधप्रतिष्ठान-निदेशकः

प्रकाशकः

शैवभारती-शोधप्रतिष्ठानम्

जंगमवाड़ीमठ, वाराणसी - २२१ ००१

विषयानुक्रमणी

शुभाशीर्वचन

vii

प्रस्तावना

x

ग्रन्थभाग

ज्ञान और आचार विषयक देवी पार्वती का प्रश्न	१
शिव द्वारा मोक्ष के साधन के रूप में ज्ञान और आचार का निरूपण	२
कालज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति	३
कालोत्तर-ज्ञान का अधिकारी और उसकी महिमा	४
चंचल चित्त के स्थिरीकरण का उपाय	८
चित्त की स्थिरता ही मोक्ष का प्रमुख साधन	९
चैतन्य की द्विविध स्थिति	१२
निष्कल ज्ञान की परयोगप्रवर्तकता	१३
परयोग में चक्र आदि के ध्यान की अनुपयोगिता	१४
बाह्य पूजा आदि की भी अनुपयोगिता	१७
निराकार, निरालोक, निरालम्ब स्वरूप का चिन्तन	१९
जीवन्मुक्त के लिये महाशून्य भावना का उपदेश	२२
ज्ञान की उत्पत्ति में क्रिया और चर्या की अपेक्षा निरालम्ब योग की प्रमुखता	२६
चैतन्य का सहज स्वरूप	२९
चित्त (मन) का चैतन्य में विलय अपेक्षित	३०

चित्त की चतुर्विध अवस्थाएँ	३१
चिति के वास्तविक स्वरूप का प्रबोधन	३२
चित्त (मन) की चतुर्विध स्थितियाँ	३४
सालम्बन चित्त का निरालम्ब में प्रवेश	३५
निराश्रय चित्त की मुक्तिसाधनता	३६
चित्त को निश्चल करने के उपाय	३८
शून्यस्वरूप परम तत्त्व के ध्यान से परम स्थान की प्राप्ति	४१
जीवन्मुक्त योगी का स्वरूप एवं वैराग्य की अनपेक्षा	४३
चिति शक्ति का स्वरूप	४५
स्वभाव (सहज) भावना का उपदेश	४६
सर्वत्र अहंभावना अपेक्षित	४७
अहन्ता में ईश्वरता का प्रवेश	४८
जीवन्मुक्त योगी की ब्रह्ममयता	५०
ब्रह्म के निष्प्रपञ्च चिद्रूप स्वरूप का निरूपण	५१
भगवद्गीता की पद्धति से ईश्वरता का निरूपण	५२
जीवन्मुक्त का निष्प्रपञ्च निर्वाण पदवी में प्रवेश	५७
ज्ञान के बाद आचार के निरूपण की प्रतिज्ञा	५७
बाह्य स्नान, पूजा, अग्निकार्य आदि अनपेक्षित	५८
कुलाचार, लोकाचार, समयाचार आदि का निषेध	६०
सिद्धियों की प्राप्ति के प्रति निरपेक्ष भावना	६१
कृमि, कीट आदि की भी हिंसा का निषेध	६३
मारण, उच्चाटन आदि क्षुद्र कृत्यों का परित्याग	६४
काष्ठ-पाषाण पूजन का निषेध	६४
सभी के प्रति सभी स्थितियों में समदृष्टि अपेक्षित	६६
जीवन्मुक्त साधक में सर्वज्ञता का प्रादुर्भाव	६९

मोक्ष की प्राप्ति के प्रति ज्ञान की प्रधानता	६९
शिव से लेकर पृथिवी पर्यन्त समस्त विश्व की शङ्करात्मकता	७१
जीवन्मुक्त शिवयोगी की सेवा का फल	७२
ग्रन्थ का उपसंहार	७३
परिशिष्ट	७५

